Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 18 Issue 12, Dec- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भिारतीय कृषि एवं गैर कृषि क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं का योगदान

डॉ. कनुप्रिया
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लक्सर,हरिद्वार, उत्तराखंड

प्रस्तावना

महिलाएं किसी भी विकसित समाज की धुरी होती हैं, जो देश के दीर्घकालिक विकास को सुनिश्चित करती हैं। देश के सतत आर्थिक एवं सामाजिक विकास में ग्रामीण महिलाएं अहम भूमिका निभा रही हैं। वे कृषि तथा गैर–कृषि क्षेत्र में एक किसान, मजदूर और उद्यमी के रूप में अपना योगदान देती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं काम करने और आर्थिक विकास में योगदान देने में पुरुषों के बराबर प्रदर्शन कर रही हैं। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार, "दुनिया भर की आबादी के लगभग एक चौथाई हिस्से में ग्रामीण महिला किसान, दिहाड़ी मजदूर और छोटी कारोबारी शामिल हैं। ग्रामीण इलाकों में, आय के मामले में लैंगिक असमानता की खाई 40 प्रतिशत तक ऊँची है, यानी पुरुषों के मुकाबले महिलाओं को कम आमदनी होती है। श्रम बल में मौजूद लैंगिक असमानता की खाई को वर्ष 2025 तक 25 प्रतिशत पाटने से ही वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में 3.9 प्रतिशत का इजाफा हो सकता है। अगर ग्रामीण महिलाओं को कृषि सम्पदा, शिक्षा और बाजारों की उपलब्धता में समान भागीदारी मिले, तो भुखमरी का सामना करने वाले लोगों की संख्या में 10 से 15 करोड़ तक की कमी लाइ जा सकती है।" भारत की स्थिति भी इससे भिन्न नहीं हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण महिलाओं की कृषि तथा गैर–कृषि क्षेत्र में भागीदारी और संभावनाओं पर विचारकिया जाएगा।

मुख्यशब्द – महिलाएं, ग्रामीण, रोजगार, कृषि, गैर–कृषि।

उद्देश्य - 1 विकास कार्यों में महिला श्रम के योगदान को रेखांकित करना।
2 कृषि तथा गैर कृषि क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं की हिस्सेदारी में वृद्धि से आजीविका में सुधार की संभावनाओं का आकलन करना।

कृषि क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं की साझेदारी

पिछले तीन दशक में, भारत के 'कृषि क्षेत्र ने महिलाओं की बदलती भूमिका को मजबूत होते हुए देखा है। भारतीय कृषि क्षेत्र को आकार देने में महिलाओं का योगदान अभूतपूर्व है और अंतर्राष्ट्रीय मानवीय समूह OXFAM के अनुसार, भारतीय खेतों पर पूर्णकालिक किसानों में से लगभग 75प्रतिशत महिलाएं हैं। महिला किसान दक्षिण एशियाई देशों के भोजन का 60प्रतिशत से 80प्रतिशत उत्पादन करती हैं। ये महिलाएं कई भूमिकाओं में पुरुषों के समान विकास का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं।

कृषि उत्पादन : भारत की जनगणना 2011 के अनुसार देश को कुल जनसंख्या की 65 प्रतिशतजनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है तथा यह जनसंख्या कृषि तथा संबद्ध क्षेत्रों में संलग्न है। कृषि ग्रामीण आजीविका का मुख्य साधन है। यहां महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि कृषि कार्यों में मुख्य रूप से महिलाएं अधिक

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 18 Issue 12, Dec- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अहम भूमिका में हैं। गांवों में आर्थिक रूप से सक्रिय 80 प्रतिशत महिलाएं कृषि क्षेत्र में कार्यरत हैं। इनमें से लगभग 33 प्रतिशत कृषि श्रमिक के तौर पर और 48 प्रतिशत स्व–नियोजित किसानों के तौर पर कार्य कर रही हैं। एनएसएसओ की 2017–18 रिपोर्ट के मुताबिक भारत में लगभग 18 प्रतिशत खेतिहर परिवारों का नेतृत्व महिलाएं ही करती हैं। खाद्य और कृषि संगठन के अनुसार कृषि क्षेत्र के कुल श्रम में ग्रामीण महिलाओं का योगदान 43 प्रतिशत है।

वर्ष 2011 की जनगणना के मुताबिक देश में महिला किसानों की संख्या 3.6 करोड़ थी। जबकि खेती में महिला मजदूरों की संख्या 6.16 करोड़ थी। इनमे से करीब 48 प्रतिशत महिलाएं कृषि संबंधी रोजगार में शामिल हैं। जबकि 7.5 करोड़ महिलाएं दूध उत्पादन और पशुधन प्रबंधन में उल्लेखनीय भूमिका निभा रही हैं। ये आंकड़े यह साबित करते हैं कि महिलाओं का योगदान कृषि क्षेत्र में कितना अधिक और महत्वपूर्ण है। महिलाओं को ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है क्योंकि गृहस्थी की जिम्मेदारियों के साथ–साथ महिलाएं कृषि संबंधी विभिन्न जिम्मेदारियों भी निभाती हैं। फसल के लिए भूमि को तैयार करने से लेकर बाजार में बिकने तक की प्रत्येक क्रिया में महिलाएं अहम योगदान प्रदान करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में पुरुषों के बढ़ते प्रवास ने कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को और अधिक बढ़ा दिया है, इसलिए भी कृ षि और संबद्ध गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी अधिकाधिक महत्त्वपूर्ण हो गई है। 15 अक्ट्बर, जिसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है, इसे भारत सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय महिला किसान दिवस' के रूप में मनाया जाता है, जिससे महिला किसानों और ग्रामीण महिलाओं को और प्रोत्साहन मिल सके। ग्रामीण महिला सशक्तिकरण के साथ खाद्य प्रणालियों को जोड़ने के लिए 2021 में, अंतर्राष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस को 'सभी के लिए अच्छे भोजन की खेती करने वाली ग्रामीण महिलाएं' थीम के साथ चिह्नित किया गया था। कृषि संबंधी गतिविधियों में सहायक के तौर पर महिलाएं काफी संख्या में शामिल हाती हैं। कृषि क्षेत्र में संख्या बल काफी ज्यादा होने के बावजूद भारत में महिलाओं को अब भी वेतन, अधिकार और स्थानीय किसान संगठनों में प्रतिनिधित्व के मामले में नुकसान उठाना पड़ता है। महिलाओं के सशक्तिकरण की कमी के चलते उनके बच्चों को शिक्षा न मिलने और परिवार के खराब स्वास्थ्य की बातें भी सामने आती हैं। यदि महिलाओं को पुरुष किसानों की तरह एग्रीकल्चर क्रेडिट, क्रॉप इंश्योरेंस, मार्केटिंग सपोर्ट और आपदा में मुआवजे का हक मिले तो वे और बेहतर प्रदर्शन करने में सक्षम होंगी।

वस्तुतः ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को स्वास्थ्य, शिक्षा तथा आर्थिक गतिविधियों में संलग्न होने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें सशक्त बनाना न केवल परिवार और ग्रामीण समुदायों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि समग्र आर्थिक उत्पादकता के लिए भी महत्वपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्र प्रमुख एंतोंनियोगुटेरेश ने कहा है कि 'ग्रामीण महिलाएँ कृषि, खाद्य सुरक्षा और भूमि व प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन में बहुत अहम भूमिका निभाती हैं, परंतु फिर भी वो भेदभाव का सामना करती हैं। उनके साथ व्यवस्थागत नस्लभेद होता है और वो ढांचागत गरीबी में जीवन जीती हैं(15 अक्तूबर 2020, संयुक्त राष्ट्र समाचार)। यदि वैश्विक स्तर पर देखें तो महिलाओं की स्थिति वास्तव में चिंताजनक है। वे विकास गतिविधियों में जितनी बड़ी भूमिका निभा रही हैं, उसकी तुलना में उनकी प्राप्तियाँ न के बराबर हैं।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 18 Issue 12, Dec- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पशुधन प्रबंधन : कृषि के साथ–साथ महिलाएं पशुधन प्रबंधन, विशेष रूप से बकरी पालन, मुर्गी पालन, डेयरी, मछली पालन, बत्तख पालन, खरगोश पालन आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पशुपालन के क्षेत्र में भी महिलाओं ने अपनी एक पहचान स्थापित की है। ग्रामीण परिवारों के लिए पशुधन क्षेत्र उनका एक अभिन्न अंग है और आजीविका के लिए एक प्रमुख संपत्ति भी। पशुपालन खाद्य सुरक्षा और गरीबी को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। जैसे,डेयरी उत्पाद दूध, दही, मक्खन आदि और मछली, अंडा, शहद से आय प्राप्त होती है तो वहीं गोबर से बनी खाद एक ओर खेतों में काम आती है तो दूसरी ओर शहरों में खाद बेचकर किसान महिलाएं आय का स्रोत तैयार कर लेतीं हैं। भारत में पशुधन उत्पादन का क्षेत्र काफी हद तक महिलाओं के हाथ में है और महिलाओं के कुल कार्यबल का 70 प्रतिशत पशुधन क्षेत्र में लगा हुआ है। कृषि से संबंधित गतिविधियों में तथा पशुधन उत्पादन में महिला श्रमिकों का सबसे बड़ा हिस्सा शामिल है। कुल महिला ग्रामीण कामगारों में से 8.8 प्रतिशत और कुल पुरुष ग्रामीण कामगारों में से 1.8 प्रतिशत पशुधन उत्पादन में लगे हुए हैं। पशुधन उत्पादन में पुरुष श्रमिकों की तुलना में स्व–नियोजित महिला श्रमिकों की एक बड़ी हिस्सेदारी है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और डीआरडब्लूए की ओर से नौ राज्यों में किये गये एक शोध से पता चलता है कि पशुपालन में महिलाओं की भागीदारी 58 प्रतिशत और मछली उत्पादन में यह आंकड़ा 95 प्रतिशत तक है। सिर्फ इतना ही नहीं, नेशनल सैंपल सर्वे ऑर्गनाइजेशन (NSSO2017–18) के आंकड़ों को देखें तो 23 राज्यों में कृषि, वानिकी और मछली पालन में ग्रामीण महिलाओं का कुल श्रम की हिस्सेदारी 50 प्रतिशत है। वर्ष 2011–12 के रोजगार और बेरोजगारी सर्वेक्षण के अनुसार, 1.2 करोड़ ग्रामीण महिलाएँ पशुधन पालन में कार्यरत थीं। जबकि वर्ष 2019 में राष्ट्रीय समय उपयोग सर्वेक्षण (National Time Use Survey) के आँकड़ों के अनुसार, वास्तव में पशुधन अर्थव्यवस्था में लगी महिलाएँ आधिकारिक अनुमान से चार गुना अधिक अर्थात् लगभग 4.8 करोड़ हैं। 2020–21 की रिपोर्ट के अनुसार, पशुधन क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद में 4.11प्रतिशत और कुल कृषि सकल घरेलू उत्पाद में 25. 6प्रतिशत का योगदान देता है। इस प्रकार पशुपालन को देश के आर्थिक विकास और समाज में वांछनीय परिवर्तन लाने तथा महिलाओं के स्वरोजगार के लिए एक विशेष क्षेत्र माना जाता है। विकास और आमदनी की असीम संभावनाएं लिए रेशम उत्पादन भी महत्वपूर्ण व्यावसायिक फसलों में से एक है। विश्व स्तर पर एशिया को रेशम का मुख्य उत्पादक क्षेत्र माना जाता है। कम लागत पर अधिक आय प्रदान करने वाले इस उद्योग में ज्यादातर महिलाएं प्रमुख कामगार के रूप में सक्रिय हैं। यह क्षेत्र महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने और इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण महिलाओं को गरीबी के चक्र से बाहर निकालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

गैर–कृषि क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं की साझेदारी

कृषि संबंधी समस्याओं तथा आय की अनिश्चितता के कारण ग्रामीण परिवारों का आजीविका हेतु विशेष रूप से महिलाओं का आय एवं रोजगार के वैकल्पिक अवसर के रूप में गैर–कृषि गतिविधियों की ओर रुझान बढ़ा है। गैर कृषि क्षेत्र में निर्माण, खनन, खाद्य प्रसंस्करण, संचार, यातायात, भंडारण,स्थानीय कला, शिल्प, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं आदि शामिल हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए गैर–कृषि गतिविधियां कृषि क्षेत्र की अनिश्चितता के बीच एक सुरक्षा कवच का काम रही है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 18 Issue 12, Dec- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

खिलौना उद्योग : भारतीय पारंपरिक खिलोने हमारे देश की संस्कृति और क्षेत्रीय विविधताओं को दर्शाते हैं, वही यह उद्योग आर्थिक रूप से ग्रामीण क्षेत्रों को रोजगार के अवसर, आय सृजन अर्थात आर्थिक मजबूती प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत के खिलौना उद्योग में लगभग 30 लाख कर्मचारी कार्यरत हैं जिनमें से दो तिहाई से अधिक महिलाएं हैं। यह क्षेत्र महिलाओं की आर्थिक मजबूती की पहचान भी बना हुआ है। वैश्विक खिलौना बाजार वर्तमान में करीब 100 अरब डॉलर का है। इसमें भारत की हिस्सेदारी लगभग डढ़ अरब डॉलर ही है। देश में करीब 85 प्रतिशत खिलौने आयात किए जाते हैं। उनमें भी 70 फीसदी खिलौने चीन से आते हैं। ऐसे में यह उद्योग एमएसएमई सेक्टर में बड़े अवसर प्रदान करने का संकेत देता है। भारत सरकार इस क्षेत्र पर विशेष जोर दे रही है।

पिछले साल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के पहले 'खिलौना मेला 2021' का वर्चुअल उद्‌घाटन करते हुए कहा था कि खिलौना उद्योग का विकास करके देश न केवल खिलौना उत्पादन में आत्मनिर्भर बन सकता है, बल्कि वैश्विक बाजार की जरूरतें पूरी करने के लिए तेजी से आगे बढ़ सकता है। प्रधानमंत्रो के अनुसार, वैश्विक खिलौना उद्योग में भारत की हिस्सेदारी लगभग नगण्य है। जबकि भारत अपने खिलौनों की मांग पूर्ति करने में सक्षम है। द इंटरनेशनल मार्केट एनालिसिस रिसर्च ऐंड कंसल्टिंग की रिपोर्ट के मुताबिक, इस समय भारत में खिलौना बाजार लगभग 12,000 करोड़ रुपये का है, जो वर्ष 2024 में 24,000 करोड़ तक पहुंच सकता है। इस आंकड़े से अनुमान लगाया जा सकता है कि यह क्षेत्र कितने अधिक लोगों को रोजगार देने में सक्षम हो सकता है।

वस्तुतः कोरोना संकट की चुनौतियों के बीच सरकार 'वोकल फॉर लोकल' व 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' के तहत खिलौना उद्योग को अधिकतम प्रोत्साहन देने तथा खिलौना बाजार से चीन के खिलौनों को हटाने की रणनीति के साथ आगे बढ़ी है। यह खिलौना कारोबार के लिए शुभ संकेत है। सरकार की रणनीति सिर्फ घरेलू ही नहीं, बल्कि वैश्विक खिलौना बाजार में भी प्रभाव छोड़ने की है इसलिए खिलौना उत्पादकों से कहा गया है कि वे ऐसे खिलौने बनाएं, जिनमें एक भारत, श्रेष्ठ भारत की झलक हो और उन खिलौनों को देखकर दुनिया भारतीय संस्कृति और और भारतीय मूल्यों को समझ सकें।

अमर उजाला अखबार की एक रिपोर्ट के अनुसार,"सरकार ने खिलौना उद्योग को देश के 24 प्रमुख सेक्टर में स्थान दिया है। भारतीय खिलौनों को वैश्विक खिलौना बाजार में बड़ी भूमिका निभाने हेतु खिलौना उद्यमियों को प्रेरित किया जा रहा है। केंद्र एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा स्थानीय खिलौना उद्योग को प्रोत्साहित किया जा रहा है। फरवरी, 2020 में, खिलौना आयात के शुल्क में 200 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। इसके अलावा एक सितंबर, 2020 से आयात किए जाने वाले खिलौनों के लिए ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैडर्ड के मापदंड लागू कर दिए गए हैं।

सरकार द्वारा खिलौनों पर लगाए गए आयात प्रतिबंधों से चीनी खिलौनों की आवक धीमी हो गई है। इससे जहां स्थानीय व्यापारियों को फायदा मिल रहा है, वहीं खिलौना उद्योग में रोजगार और स्वरोजगार के अवसर भी बढ़ गए हैं। "सरकार द्वारा खिलौना निर्माण के काम को विकसित करने का आह्वान किया और महिलाओं को प्रशिक्षण देकर खिलौना उद्योग में आने तथा आत्मनिर्भर बनने के लिए

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 18 Issue 12, Dec- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रेरित किया है। इसे स्किल इंडिया प्रोग्राम के अंतर्गत भी सम्मिलित किया गया है, इसका बड़ा उदाहरण है देवघर के ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं ने घरों में खिलौने बनाने का काम प्रारंभ किया,जिससे महिलाओं को रोजाना लगभग 500 से 600 रुपये की आमदनी होने लगी। इस प्रयास ने महिलाओं को अपने पैरों पर खड़े होने का एक अवसर दिया। ग्रामीण इलाकों में महिलाओं ने प्रशिक्षण लेकर घर में ही कई प्रकार के बेहतरीन खिलौने बनाने का काम किया जा रहा है।

हथकरघा उद्योग : ऐतिहासिक रूप से महिला बुनकर हथकरघा बुनाई प्रथाओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही हैं, लेकिन इस क्षेत्र में उनके योगदान पर किसी का ध्यान नहीं जाता है क्योंकि बुनाई ज्यादातर कारीगरों के लिए एक घरेलू गतिविधि है। अब, हथकरघा क्षेत्र के आधुनिकीकरण के साथ–साथ कुछ अन्य कारक महिलाओं को हाशिए की ओर धकेल रहे हैं। चौथी अखिल भारतीय हथकरघा जनगणना, 2019–20 के अनुसार, देश में लगभग 72 प्रतिशत हथकरघा बुनकर महिलाएं हैं। भारत में महिला बुनकरों की संख्या आज 3.8 करोड़ से अधिक है। भारत में हथकरघा बुनकरों के पारंपरिक परिवारों कि ज्यादातर महिलाएं इस काम में लगी हुई हैं। इन परिवारों कि ज्यादातर महिलाएं और लड़कियां शुरू से ही इस काम को संभालती रही हैं। यहां तक कि अगर महिलाएं बुनाई नहीं कर रही हैं, तब भी वे संबद्ध कार्यबल का हिस्सा होंगी ही क्योंकि इसमें पूरा परिवार शामिल होता है।

हथकरघा क्षेत्र देश की शानदार सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है और देश में आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी है। देश का कोई भी हिस्सा ऐसा नहीं है, जहाँ हथकरघे से सम्बंधित कार्य न होता हो। इस क्षेत्र में खादी आन्दोलन ने भी बड़ी भूमिका निभाई है। यह क्षेत्र महिला सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि ज्यादातर बुनकर और संबद्ध श्रमिक महिलाएं हैं। वर्तमान हालत में हथकरघा क्षेत्र इसलिए भी खास हो गया है क्योंकि कोरोना की परिस्थितियों ने सरकार का ध्यान इस और खींचा है। केंद्र और राज्य सरकारों की कोशिश के फलस्वरूप तमाम सूक्ष्म और लघु उद्योग से जुड़े हथकरघा बुनकर आत्मनिर्भर भारत के तहत योजनाओं का लाभ ले रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने भी वोकल फॉर लोकल का नारा दिया। साथ भी कई अवसरों पर पीएम ने हथकरघा से बने उत्पादों का प्रयोग करने की अपील की है।

2015 में हथकरघा उद्योग और बुनकरों की कला को वैश्विक पहचान देने के लिए इंडिया हैंडलूम' ब्रांड लॉन्च किया गया। इसके लॉन्च के बाद से 184 उत्पाद श्रेणियों के तहत 1,590 रजिस्ट्रेशन कराये गये। इस क्षेत्र से होन वाले निर्यात की कुल आय 2,000 करोड़ रुपये प्रति वर्ष है। इससे कई हथकरघा बुनकरों को पहचान मिली और उन्होंने खुद का अपना नया ब्रांड भी बनाया। वस्तुतः यह क्षेत्रउत्साहजनक ढंग से तरक्की कर रहा है।

खाद्य मसाला उद्योग : ग्रामीण इलाकों में रोजगार के सीमित साधनों का होना तथा महिलाओं का कम शिक्षित होना या अशिक्षित होना उनके लिए आर्थिक आत्मनिर्भर के होने में सबसे बड़ी बाधा है, परंतु उनके लिए छोटे–छोटे उद्योग से जुड़कर अपनी आजीविका कमाना एक अच्छा विकल्प है। इन विकल्पों में खाद्य मसालों के व्यवसाय का विकल्प एक महत्वपूर्ण विकल्प है। विश्व में मसालों का व्यवसाय आज सबसे तीव्र गति से बढ़ने वाला एक ऐसा उद्योग है जिसमें विकास की असीम संभावनाएं मौजूद है। मसाले भारतीय

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 18 Issue 12, Dec- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भोजन का न केवल अभिन्न हिस्सा हैं बल्कि ग्रामीण महिलाओं को रोजगार देने वाला एक महत्वपूर्ण साधन भी है।

उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले के गोरिया गांव में महिलाओं का एक समूह मसाला बनाकर उसे दुकानों पर बेचने का काम स्वयं करती है तथा 400 विद्यालयों में मिड डे मील के लिए मसालों को पहुंचने का लक्ष्य भी निर्धारित किया है। इसी प्रकार दतिया जिले के मुरेर ग्राम में 12 महिलाओं ने स्वयं खाद्य मसाला निर्माण इकाई प्रारंभ की तथा उसे आसपास के गांवों और शहरों में उत्पादन बिक्री कर आत्मनिर्भर बन कर मिसाल कायम की।

निष्कर्ष और सुझाव

ग्रामीण महिलाएं भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं जिनका देश के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि तथा गैर–कृषि कार्यों और ग्रामीण विकास को बढ़ाने, खाद्य सुरक्षा में सुधार और ग्रामीण गरीबी उन्मूलन में ग्रामीण महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका और योगदान अभूतपूर्व है। महिलाओं के प्रत्यक्ष योगदान एवं सक्रिय भागीदारी के परिणामस्वरूप भारत अनेक प्रकार के फल, सब्जी और अनाज के मामले में महत्त्वपूर्ण उत्पादक देश बन गया है। पशुपालन, मछली पालन, खाद्य परिरक्षण, हथकरघा–दस्तकारी, खाद्य मसाला उद्योग, माचिस उद्योग, सिलाई, कढ़ाई जैसे कामों में ग्रामीण महिलाएँ पीछे नहीं हैं। वे खेतों में कार्य करने के अलावा कृषि सम्बन्धी मामलों में महत्त्वपूर्ण निर्णय भी लेती हैं। इन सभी क्षेत्रों में ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से ज्यादा सक्षम तथा सशक्त बनाने की आवश्यकता है तथा आय के मामले में उन्हें समानता का अधिकार दिया जाना भी आवश्यक है। महिलाओं को कृषि तथा गैर कृषि कार्यों उन्नत प्रशिक्षण देकर और अधिक दक्ष तथा आत्मनिर्भर बनाने की जरूरत है। उन्हें जागरूक और प्रोत्साहन प्रदान करने की भी आवश्यकता है जिससे उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों के माध्यम से देश के आर्थिक विकास को और बल मिल सके तथा ग्रामीण महिलाएं आत्मनिर्भर बन सकें। दुनिया में क्यूबा, वियतनाम, जापान, चीन तथा यूरोप के जिन देशों में महिलाओं को बराबरी के अवसर दिए गए, उन सभी देशों ने उल्लेखनीय तरक्की की है। सरकार को गैर–कृषि क्षेत्र में उन उद्योगों पर विशेष ध्यान और बल देना चाहिए जो महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में सहायक हैं। समानता के साथ वृद्धि को लेकर आगे बढ़ना ही ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाएगा।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 18 Issue 12, Dec- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संदर्भ

1. सिहाग,ज्योति,कृषि में महिलाओं का योगदान,कृषिसेवा,2022. https://www.krishisewa.com/miscellaneous-articles/1444-contribution-of-women-in-agriculture.html
2. धुर्वे,वंदना, नाथवानी, चन्द्रिका, कुटीर उद्योग में संलग्न महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक स्थिति का अध्ययन,International Journal of Scientific Research in Science and Technology, Vol. 9, Issue-3, 2022.
3. सिंह,अभिषेक, मसाले बनाकर ग्रामीण महिलाएं हो रहीं आत्मनिर्भर, जागरण,20 जून 2022.
4. पशुपालन में महिलाओं को भूमिका,संस्कृतिIAS,https://www.sanskritiias.com/hindi/news-articles/role-of-women-in-animal-husbandry,19.10.2022.
5. महिला किसानों के लिए मित्रवत पुस्तिका, राष्ट्रीय किसी महिला संसाधन केंद्र एवं किसान विकास मंत्रालय भारत सरकार,2022.
6. स्मिता, जूही,"रेशम के धागों के लघु उद्योग से आत्मनिर्भर बनतीं ग्रामीण महिलाएं", 2021,https://www.google.com/amp/s/www.youthkiawaaz.com/2021/07/rural-women-becoming-self-reliant-by-the-small-scale-industry-of-silk-thread-hindi-article/amp/
7. योजना, विशेषांक, नारी शक्ति, सितंबर 2021.
8. प्रधान,नितिन, ग्रामीण अर्थव्यवस्था में लघु एवं कुटीर उद्योग का योगदान,कुरुक्षेत्र, ग्रामीण गैर–कृषि क्षेत्र, जुलाई 2019.
9. यादव,सुयश,ग्रामीण पर्यटनःकृषितर गतिविधियों का महत्वपूर्ण घटक,कुरुक्षेत्र, ग्रामीण गैर–कृषि क्षेत्र, जुलाई 2019.
10. झा,सिद्धार्थ,महिलाओं की उन्नति के खुलते द्वार, कुरुक्षेत्र, प्रगति पथ पर ग्रामीण भारत, जून 2018.
11. तिवारी,के.एन.,महिलाओं की उन्नति के खुलते द्वार, कुरुक्षेत्र, प्रगति पथ पर ग्रामीण भारत, जून, 2018.
12. Dudi,K., Devi, I., Kumar, R. , Contribution and Issue of Women in Livestock of India: A Review, International Journal of Livestock Research, ISSN-221964,http://ijlr.org/issue/contribution-and-issues-of-women-in-livestock-sector-of-india-a-review/